(Hindi Literature / हिन्दी साहित्य)

56. समकालीन हिन्दी कविता और वैचारिक चुनौतियां (डॉ. स्वामीराम बंजारे 'सरल') 149
57. जीवन यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में मुक्तिबोध की कहानियाँ (डॉ. इला द्विवेदी) 153
58. हिन्दी के प्रारंभिक उपन्यासों में लोक तत्व – एक अध्ययन (डॉ. आई. बेक, डॉ. दीपक कुमार गुप्ता) 156
59. जीवनीपरक उपन्यासों की विकास – यात्रा (डॉ. माधुरी उपाध्याय) 159
60. मूल्य व्यवस्था के निर्माण में 'गोदान' की भूमिका (डॉ. सनकादिक लाल मिश्र) 162
61. पण्डित रामनारायण उपाध्याय के व्यंग्य (डॉ. गणेश लाल जैन) 166
62. प्रगतिवादी कविता में सौन्दर्य चेतना (डॉ. रविशंकर पटेल) 168
63. भारत, भारतीयता और संस्कृति (डॉ. रशीदा खान) 170
64. हिन्दी उपन्यास और आदिवासी विमर्श (डॉ. अंजली सिंह) 172
65. एक नाटककार का कथाकार के रूप में मूल्यांकन (जयशंकर प्रसाद की चर्चित कहानियों के विशेष संदर्भ में) 174
(डॉ. रमेश कुमार टण्डन)
66. सिद्ध एवं नाथ परंपरा – मान्यताएँ एवं वाचिक साहित्य (डॉ. सरोज जैन) 177
67. हिन्दी सिनेमा के बदलते परिदृश्य (डॉ. अमित शुक्ल) 178
68. तकनीकी क्रांति में हिन्दी भाषा के बढ़ते कदम (डॉ. वंदना चराटे) 180
69. लोक साहित्य में सामाजिकता (डॉ. एस. एस. राठौर) 182
70. समकालीन महिला कहानीकार – क्षमा शर्मा और उनका कृतित्व (डॉ. रागनी चौहान) 184
71. लोक साहित्य में संस्कृत साहित्य की सामाजिक चेतना (डॉ. मंशाराम बघेल) 186
72. व्यक्तित्व के धनी – श्रीलाल शुक्ल (पुष्पा बर्डे) 188
73. लोक जीवन के चितेरे – नागार्जुन (डॉ. रवीन्द्र कुमार सोनपुरे) 190
74. निर्गुण उपासना मिथ्याडंम्बरों पर प्रहार और मन की शुद्धता (डॉ. छविनम श्रीवास्तव) 192
75. कबीर साहित्य में मानव मूल्य (डॉ. मंजू देवी मिश्रा, डॉ. सनकादिक लाल मिश्र) 194
76. देवी नर्मदे (डॉ. गुलाब सोलंकी) 196

(Law/ विधि)

77. Judicial Governance In India (Aprajita Bhargava) 197

(Education / शिक्षा)

78. A Compare Study Between Academic Achievement And Emotional Intelligence Among 200
Government And Private Higher Secondary School's Students (Manish Rathore)

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 4.710 (2016) January to March 2017, Vol. I

एक नाटककार का कथाकार के रूप में मूल्यांकन (जयशंकर प्रसाद की चर्चित कहानियों के विशेष संदर्भ में)

डॉ. रमेश कुमार टण्डन *

शोध सारांश – रचना-धर्मिता के आधार पर ही प्रसाद जी के नाम से एक युग का नामकरण हुआ- प्रसाद युग। यह युग हिन्दी साहित्य में 'नाटक' और 'एकांकी' विधा के रचना काल के नाम से विख्यात हुआ। नाटक विधा में भारतेंदु युग के पश्चात् प्रसाद युग का नाम आता है। एकांकी विधा में भारतेंदु युग के पश्चात् द्विवेदी युग, फिर प्रसाद युग का नाम आता है। इन्होंने करूणालय, सज्जन, कामना, विशाखा, कल्याणी परिणय, अजातशत्रु, प्रायश्चित, चंद्रगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि नाटक लिखा। सुविख्यात ऐतिहासिक नाटककार के बावजूद, प्रसाद जी को कवि-कथाकार भी कहा जाता है। इनकी प्रमुख कहानियाँ ग्राम, छाया, इंद्रजाल, आकाशदीप, आँधी, सुनहला साँप, सालवती, मधुवा, गुंडा, पुरस्कार, चूड़ी वाली नीरा, प्रतिध्वनि, देवरथ-जयशंकर प्रसाद, चंदा, शरणागत, दुखिया, ममता, स्वर्ग के खण्डहर में, बिसाती, कला, देवदासी, मदन-मृणालिनी, पीरू आदि हैं। इन्हीं कहानियों के आधार पर प्रसाद जी का, एक कथाकार के रूप में मूल्यांकन करना, शोध-पत्र लेखक का विवेच्य - विषय है।

प्रस्तावना - प्रसाद जी सांस्कृतिक चेतना के कथाकार हैं। आदर्शवादी होते हुए भी इन्होंने यथार्थ की उपेक्षा नहीं की। साहित्य की सोद्देश्यता और सामाजिक सरोकारों की प्रतिष्ठा के लिए इन्होंने कहानी को एक नई दिशा दी। विषय- वैविध्य और प्रयोगों की नवीनता तो प्रसाद की कहानियों में खूब है ही, बंधनों का अस्वीकार भी है। स्त्री को दृष्टि-विशेष से प्रस्तुत करने वाले प्रसाद जी सम्भवत: हिन्दी के पहले ऐसे कथाकार हैं, जो बहुत चुपके से उसकी स्थिति और सामर्थ्य को एक साथ सामने रख गंभीर विषय की आवश्यकता पर बल देते हैं।

'मदन-मृणालिनी' में लेखक दु:खान्त कहानी से प्रेरित प्रतीत होता है। नायक और नायिका का मिलन नहीं हो पाता। आदर्श की स्थापना करते हुए अशरीरी प्रेम का उजागर हुआ है। जाति और धर्म का भय भी लेखक पाठकों को दिखाता है। नायक की माँ कहानी में कहीं विलीन हो जाती है। 'चंदा' में पहले कहानी सपाट चलती है। फिर प्रतिशोध और एकनिष्ठ प्रेम। यहाँ भी कहानी दु:खान्त है।

'ग्राम' में जमींदारी प्रथा का जिक्र किया गया है। कर्ज देकर ब्याज बढ़ाना, फिर जमीन की नीलामी करा हड़प लेने को अभिव्यक्ति मिली है। यह कहानी भी दु:खान्त है और बिना निष्कर्ष के ही समाप्त हो जाती है। कहीं ग्राम्य जीवन की भाषा, तो कहीं प्राकृतिक वर्णन में संस्कृत निष्ठ भाषा का प्रयोग हुआ है।

'शरणागत' में लेखक ने दर्शाया कि भले ही पश्चिमी-सभ्यता में पली-बढ़ी महिला को भारतीय स्त्री एक दासी (शरणागत) नजर आती हो लेकिन भारतीय स्त्री अपने आपको सहचर के रूप में नहीं अपितु अनुचर के रूप में पहचाना जाना पसंद करती हैं, इसे वे अपना सौभाग्य मानती हैं, इस भारतीय संस्कृति के गुण से दूसरों को भी वे प्रभावित और प्रेरित भी करती हैं। सुखान्त कहानी है। 'ममता' में भी दु:खान्त कहानी इर्द-गिर्द घुमती है। ऐतिहासिक पात्रों को स्थान देते हुए कहानी को आगे बढ़ाया गया है।

'आकाशदीप' एक चर्चित कहानी है। इसमें नायिका चम्पा प्रतिशोध की परिणति करुणा में खोजती है। प्रेम और घृणा इस कहानी को यादगार बना देता है। इसमें नाटक की तरह संवाद एवं कथोपकथन का दृश्य झलकता है। संवाद में भी कहीं हास्य तो कहीं असाधारण सत्य का उजागर किया गया। यथा-

'बंदी!'
'क्या है? सोने दो।'
'मुक्त होना चाहते हो?'
'अभी नहीं, निद्रा खुलने पर, चुप रहो।'
'फिर अवसर न मिलेगा।'.....
दूसरी जगह, 'यह क्या? तुम स्त्री हो?'
'क्या स्त्री होना कोई पाप है?'

'दुखिया' में गरीबी का वर्णन है। कहीं पर गाली भी है। जमींदार ने दुखिया के साथ नीचता का बर्ताव किया- 'मारे जवानी के तेरे मिजाज ही नहीं मिलता। बाद में इसने दुखिया को 'चुप हरामजादी' भी कहा। इसमें संवाद एवं कथोपकथन का दृश्य है, यथा-

'क्या तुम रामगुलाम की लड़की हो?'
'हां बाबूजी।'
'बहुत दिनों से दिखता नहीं।'
'बाबूजी, उनको आंखों से दिखाई नहीं पड़ता।'

'स्वर्ग के खण्डहर' में ऐतिहासिक पात्रों का सहारा लेकर प्रसाद जी, अपने समय के सत्य से लड़ने के लिए अतीत की खुदाई जरूर करते थे, लेकिन उन्हें भविष्य का ध्यान भी बराबर रहता था। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि पृथ्वी को केवल वसुंधरा होकर मानव जाति के लिए रहने दें, अपनी आकांक्षा के कल्पित स्वर्ग के लिए, क्षुद्र स्वार्थ के लिए इस धरती को नरक न बनाएं।

कुछ अधूरा-सा 'सुनहला सांप' की कहानी, प्रसाद जी की जुबानी। संशय की स्थिति निर्मित होती है। कहानी में चंद्रदेव ने सोचा- 'सच तो, क्या मैं अपने को भी पहिचान सका ?'

'चूड़ीवाली' कहानी, विभिन्न नाटकीय मोड़ों से होते हुए सफलता को

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया, जिला- रायगढ़ (छ.ग.) भारत

प्राप्त करता है। यह कहानी सम्पूर्णता को हासिल करते हुए सुखान्त को प्राप्त करता है। संवाद एवं कथोपकथन की शैली भी साथ-साथ चलती है। सरल-सपाट शब्दों को प्रयोग भी हुआ है-

'तुम कौन हो ?'
'पहले की एक वेश्या।'
छि:,मुझे पड़े रहने दो।'

अक्सर इनकी कहानियों में अधूरी प्रेम कहानी या दु:खान्त कहानी परोसी गई है। इसी कड़ी में 'बिसाती', 'कला' भी शामिल हैं। 'देवदासी' में एक ऐसे प्रेम की कहानी निरूपित की गई है जिसमें रोमांच भी है, रहस्य और अशरीरी प्रेम भी। पत्रनुमा शैली में लिखी गई यह कहानी भी, अन्य कहानियों की तरह दु:खान्त और अनिश्चितता लिए हुए है। मुख्य पात्र अशोक, धीरे-धीरे अशोक से अभागा अशोक, अधम अशोक और अंत में हतभाग्य अशोक बन जाता है।

'आँधी' में अनेक तत्त्व विद्यमान हैं-दार्शनिकता, संवाद, कथा, पत्रकारिता शैली, दु:खान्त इत्यादि। प्रसाद जी ने दार्शनिकता पर अपने पात्रों के माध्यम से इस तरह कहा - 'किसी कर्म को करने के पहले उसमें सुख की ही खोज करना क्या अत्यन्त आवश्यक है ? सुख तो धर्माचरण से मिलता है। अन्यथा संसार तो दु:खमय है ही ! संसार के कार्यों को धार्मिकता के साथ करने में सुख की ही संभावना है।' संवाद एवं कथोपकथन का प्रत्यक्ष दर्शन मिलता है-

बस ! इतना ही ?
और भी कुछ है !
क्या बाबू ?
और जो उसने लिखा है, वह मैं नहीं कह सकता-
क्यों बाबू ? क्यों न कह सकोगे ? बोलो।

प्रेम की पराकाष्ठा का भी वर्णन किया गया है- 'एक लड़की को हवा लगी है, यहीं का आसेब है। पीर को दिखलाना चाहती हूँ।'

प्रकृति चित्रण का एक उदाहरण, 'बसन्त के आगमन से प्रकृति सिहर उठी। वनस्पतियों की रोमावली पुलकित थी। मैं पीपल के नीचे उदास बैठा हुआ ईषत् शीतल पवन से अपने शरीर में फुरहरी का अनुभव कर रहा था। आकाश की आलोक-माला चन्दा की वीचियों में डुबकियां लगा रही थी। निस्तब्ध रात्रि का आगमन बड़ा गम्भीर था।'

'मधुवा' में दरिद्रता का पूरी तन्मयता के साथ वर्णन हुआ है- 'एक चिन्तापूर्ण आलोक में आज पहले-पहल शराबी ने आँख खोलकर कोठरी में बिखरी हुई दारिद्र्य की विभूति को देखा और उस घुटनों से ठुड्डी लगाए हुए निरीह बालक को; उसने तिलमिलाकर मन-ही-मन प्रश्न किया- किसने ऐसे सुकुमार फूल को कष्ट देने के लिए निर्दयता की सृष्टि की ? आह री नियति !' इस कहानी में सुखान्त है।

'घीसू' में प्रसाद जी ने एक उत्कृष्ट प्रेम की अभिव्यंजना की है। यहाँ भी कहानी दु:खान्त है। अपना घर, पैसा सब कुछ घीसू ने बिंदो को दे दिया, पर बदले में उससे कुछ नहीं लिया, लिया तो सिर्फ बिंदो का दर्द और अपनी मौत।

'पुरस्कार', प्रसाद जी की एक उत्कृष्ट रचना है। ऐतिहासिक, नश्वर-प्रेम, देश-प्रेम, धर्म-शीलता, भयहीनता, पूर्वजों का मान सभी कुछ है, इस कहानी में। इनकी लगभग हर कहानी की तरह यह कहानी भी दु:खान्त है। मगध के राजकुमार विद्रोही अरूण से प्रेम करती हुई मधुलिका ने अपने अरूण का साथ दिया और अपने वीर पिता का मान रखते हुए अपने देश कौशल की रक्षा भी की। पुरस्कार में मधुलिका ने पहले तो अपने खेत के बदले मिले स्वर्ण-मुद्राओं को अस्वीकार किया, बाद में भी देश रक्षा के लिए किए गए कार्यों के लिए मिलने वाले पुरस्कार को ठुकराते हुए देश द्रोही का साथ देने के लिए अपने लिए मृत्यु-दण्ड मांगा।

'इंद्रजाल' में लेखक ने बड़ी ही खूबसूरती के साथ गोली की प्रेमिका बेला को, इंद्रजाल के बहाने, गोली को वापस दिलाया। सुखान्त कहानी। लेखक ने 'घीसू' में नारी के गौर वर्ण का वर्णन किया- 'उसकी उजली धोती में गोराई फूटी पड़ती।' परन्तु 'इंद्रजाल' में श्याम वर्ण का वर्णन इस प्रकार किया- 'बेला सांवली थी। जैसे पावस की मेघमाला में छिपे हुए आलोकपिंड का प्रकाश निखरने की अक्षम्य चेष्टा कर रहा हो वैसे ही उसका यौवन सुगठित शरीर के भीतर उद्वेलित हो रहा था। गोली के स्नेह की मदिरा से उसकी कजरारी आंखें लाली से भरी रहतीं। वह चलती तो थिरकती हुई, बातें करती तो हँसती हुई। एक मिठास उसके चारों ओर बिखरी रहती।

निष्कर्षत: प्रसाद जी की चर्चित कहानियों में कुछ कहानियाँ- शरणागत, चूड़ीवाली, इंद्रजाल, मधुवा ही सुखान्त हैं। बाकी सभी दु:खान्त हैं। एक-दो, ऐतिहासिक पात्रों को साथ लिए हुए हैं। प्रकृति - चित्रण एवं सौन्दर्य चित्रण का उत्कृष्ट वर्णन हर कहानी में मिलेगा। संस्कृतनिष्ठ, तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं, पात्रों की मांग के अनुसार, आंचलिक शब्दों को भी रूप दिया गया है। चूँकि प्रसाद जी एक प्रसिद्ध नाटककार हैं, इसीलिए इनकी कहानियों में नाटकों की तरह संवाद व कथोपकथन शैली नजर आती है। कहीं-कहीं पत्रात्मक शैली का भी दर्शन होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. संपादक : महेश दर्पण, चर्चित कहानियाँ: जयशंकर प्रसाद, सामयिक प्रकाशन, 3543 जटवाड़ा, दरियागंज नई दिल्ली, 1996

****